एनएफडीसी द्वारा अपनी नई फिल्म का अनावरण, अंग्रेजी में कहते है – एक दिलचस्प प्रेम कहानी जिसमें मुख्य भूमिका निभाएंगे संजय मिश्रा, एकावली खन्ना और पंकज त्रिपाठी

हरिश व्यास द्वारा निर्देशित, अंग्रेजी में कहते है 18 मई 2018 को पैन इंडिया थिएट्रीकल रिलिज

अंग्रेजी में कहते है एनएफडीसी द्वारा प्रस्तुत किया जा रहा है तथा शायनी एंटरटेनमेंट के सहयोग से ड्रमरोल पिक्चर्स द्वारा निर्मित है

फिल्म के अन्य कलाकार अंशुमन झा, शिवानी रघुवंशी और ब्रीजेंद्र है।

अंग्रेजी में कहते है एक अनोखी फिल्म है, जिसे वाराणसी के एक गांव में चित्रीत की है और वास्तविक जीवन के पात्रों और परिस्थितियों का दावा करती है जिससे कोई भी रिलेट हो सकता है, विशेष रूप से उन लोगों के लिए जो प्यार में हैं या पहले कभी थे. एनएफडीसी द्वारा प्रस्तुत तथा शायनी एंटरटेनमेंट के बंटी खान के सहयोग से ड्रमरोल के मानव मल्होत्रा द्वारा फिल्म का निर्माण.

इस समारोह में निर्देशक हरिश व्यास तथा कलाकार संजय मिश्रा, एकावली खन्ना, शिवानी रघुवंशी तथा अंशुमन झा उपस्थित थे.

यह फिल्म रोमांस की एक अनोखी कहानी है जो तीन साधारण युगल के जीवन को दर्शाती है जिनके आदर्श प्यार के प्रति बहुत अलग अलग विचार हैं।

52 वर्ष के यशवंत बात्रा (संजय मिश्रा) पोस्ट ऑफिस कर्मचारी है जिन्होंने अपनी पत्नी किरण (एकावली खन्ना) और उनके रिश्ते को घर की मूर्गी दाल बराबर जैसे मान लिया है.
लेकिन किरण द्वारा लिए गये एक अनपेक्षित निर्णय ने यशवंत को अपने बिगड़े हुए रिश्ते को फिर से चेतना दिलाने पर मजबूर किया। उनकी बेटी प्रीती (शिवानी रघुवंशी) के खुशहाल जुगनू (अंशुमन झा) के साथ युवा और अभिव्यक्तिपूर्ण रोमांस भी यशवंत को अपने अतीत को सुधारने के लिए प्रेरित करने में सहाय करते हैं। एक और युगल है फिरोज (पंकज त्रिपाठी) और सुमन (इप्सिता चक्रबर्ती), जो अंतर-जाति है, जिनका परिस्थितियों का सामना करने के दौरान एक-दूसरे के प्रति प्रेम प्रेरणादायक है।

इस फिल्म का लेखन हरिश व्यास का है जबकि पटकथा और संवाद हरिश व्यास तथा आर्यन सहा ने लिखे है ।

कथ्यपरक, अंग्रेजी में कहते है, की प्रेमकाहानी एनएफडीसी द्वारा पोषित पिछले फिल्मों से बिल्कूल अलग है, जिन्होंने द लंचबॉक्स, किस्सा, तितली और अन्य जैसी कुछ बेहतरीन और आशाजनक स्वतंत्र भारतीय फिल्में दर्शकों तक लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

अंग्रेजी में कहते है दक्षिण एशियाई अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह 2017 में एक आधिकारिक चयन था जहां उसने सर्वश्रेष्ठ फिल्म के लिए ऑडियंस अवॉर्ड जीता। इस फिल्म ने फाइव कॉन्टीनेंट्स अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह 2017, वेनेजुएला में सर्वश्रेष्ठ फीचर फिल्म और सर्वश्रेष्ठ निदेशक के लिए भी पुरस्कार जीते हैं।

इस फिल्म के संगीतकार प्रवीण कुवार, ओनी-आदिल और रंजन शर्मा है तथा प्रसिद्ध गीतकार योगेश गौर (आनंद, बातों बातों में, छोटी सी बात) ने लंबे समय के बाद इस फिल्म के लिए गीत लिखे है ।

फिल्म की तकनीकी टिम में सिनेमाटोग्राफर फारूक मिस्त्री (रहस्य) तथा राष्ट्रीय पुरस्कार विजेता संपादक सुरेश पै (आंखो देखी, मिथ्या) शामिल है।

इस कार्यक्रम मे उपस्थित अभिनेता संजय मिश्रा ने कहा, "आम आदमी जीवन की दैनिक वास्तविकताओं से घिरा हुआ है और प्यार पीछे रह जाता है। यशवंत का चरित्र इस विचार को अपने संवाद के साथ एक संक्षिप्त तरीके से व्यक्त करता है, जो कहता है 'ये घर चलाती है . मै दफ्तर जाता हुँ, यही प्यार है' 'आपकी प्यार की परिभाषा क्या है?'

अंग्रेजी में कहते है के निर्देशक हरिश व्यास ने कहा " यह एक रॉमेन्टीक फिल्म है.
मैं रोमांस के इस पहलू को दर्शाना चाहता था जो दैनंदिन जीवन की अच्छी बारीकियों में अधीन और छिप जाता है। भारत में रोमांस आमतौर पर युवाओं के माध्यम से चित्रित किया जाता है लेकिन यह उनतक सीमित नहीं है, इस मामले में, यह युवा कपल द्वारा हमेशा की तरह चित्रित किया गया है लेकिन 'युवा' के अलावा सभी पीढ़ियों में अनकहे प्यार को शब्दों में व्यक्त करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यशवंत बात्रा के किरदार को प्रभावी करने के लिए संजय जी एकमात्र व्यक्ति मेरे मन मे थे।"

राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम, भारत देश में अच्छे सिनेमा की गति को प्रोत्साहित करने के लिए स्थापित केंद्रीय एजेंसी है. एनएफडीसी का प्रमुख लक्ष्य योजना को बढ़ावा देने और सिनेमा में एक भारतीय फिल्म उद्योग के एकीकृत और कुशल विकास और प्रोत्साहन उत्कृष्टता का आयोजन है। पिछले वर्षों में एनएफडीसी ने आवश्यक भारतीय सिनेमा के विकास के लिए सेवाओं की एक विस्तृत श्रृंखला प्रदान की है। एनएफडीसी (और उसके पूर्ववर्ती

फिल्म वित्त निगम) ने अब तक 300 से अधिक फिल्मों का निर्माण तथा वित्त पोषण किया है। विभिन्न भारतीय भाषाओं में बनी इन फिल्मों को व्यापक रूप से प्रशंसित किया गया है तथा इन फिल्मों ने कई राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय पुरस्कार जीते है।

एनएफडीसी गांधी, सलाम बॉम्बे जैसी अंतर्राष्ट्रीय फिल्मों के सह निर्माण में अग्रेसर है तथा यह श्रृंखला किस्सा, द लंचबॉक्स, अरूणोदय और चौथी कूट जैसी अद्यतन सह निर्मित फिल्मों के साथ जारी रही।

फिल्म विकास एजेंसी के रूप में फिल्म उद्योग में अपनी अलग पहचान के अलावा राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम लिमिटेड सरकारी ग्राहकों को 360 डिग्री सेवा के साथ विज्ञापन अभियान निर्माण करके व्यावसायिक इकाई के रूप में भी कार्य करती है। अब तक, एनएफडीसी ने महिला एवं बाल विकास मंत्रालय, पर्यावरण और वन मंत्रालय, ग्रामीण विकास मंत्रालय, अल्पसंख्यक मामलों के मंत्रालय, उपभोक्ता मामलों के मंत्रालय जैसे कई के लिए महत्वपूर्ण संचार की रणनीति विकसित की है।

निर्देशक के बारे में
हरिश व्यास फाइन आर्ट्स के स्नातक और व्यवसाय से कलाकार है। उन्होंने कई फिल्में, लघु फिल्में, वृत्तचित्र तथा कॉर्पोरेट फिल्में निर्देशित की है। उनकी पंजाबी भाषा की फिल्म प्रॉपर पटोला ने सर्वोत्कृष्ट नवोदित निर्देशक तथा सर्वोत्कृष्ट पटकथा सहित छ नामांकन जीते है।

ड्रमरोल पिक्चर्स के बारे में
ड्रमरोल पिक्चर्स की स्थापना लेखक, निर्देशक तथा निर्माता मानव मल्होत्रा द्वारा 2015 में हुई थी। उन्होंने न्यूयॉर्क फिल्म अकादमी से स्नातक की उपाधि प्राप्त की है तथा विभिन्न फिल्म परियोजनाओं में निरंतर योगदान दिया है। फिलहाल न्यू जर्सी, यू एस ए से रोड- रिअलिटी ऑफ अ ड्रीम (2011), टूमोरो एव्हर आफ्टर (2016), वायरलेस (2009), कम बॅक हेली (2014) तथा समीक्षकों द्वारा प्रशंसित 25 पुरस्कार विजेती लघुफिल्म द विज़िट (2015) जैसी परियोजनाओं के लिए जाने जाते है। उन्होंने अन्य कई लघु फिल्में भी निर्देशित की है तथा उनकी कुछ फिल्मों को समीक्षकों की प्रशंसा तथा पुरस्कार मिले तथा प्रमुख अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोहों में प्रदर्शित हुई है।

वर्तमान में प्री-प्रोडक्शन में चल रही विभिन्न परियोजनाओं के लिए प्रसिध्द सिनेमाटोग्राफर फारूख मिस्त्री और निर्देशक हरीश व्यास की टीम बनाई है। ड्रमरोल को **मालेक्ट्रॉन सॉल्यूशंस** नामक सॉफ़्टवेयर व्यवसाय इकाई द्वारा वित्त पोषित भी किया जाता है, जोकि 11 साल से अधिक न्यू जर्सी, यूएसए स्थित सॉफ्टवेयर कंपनी व्यवसाय में है।